खण्ड ५

(१) तीर्थंकर महावीर द्वारा धर्म प्रचार

तीर्थंकर महावीर द्वारा धर्म-प्रचार

तीर्थंकर जीवन

प्रभु महावीर की साधना साढ़े बारह वर्ष तक अनवरत चलती रही। उसके बाद केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त हो गया। वह सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हो गए। उन्होंने ४२ वर्ष की आयु में चतुर्विध संघ की स्थापना की।

पिछले अध्ययनों में हम वर्णन कर चुके हैं कि श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार प्रभु महावीर का पहला उपदेश पावापुरी नगरी के महासेन उद्यान में हुआ। दिगम्बर जैन परम्परा प्रथम समवसरण का स्थान राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर मानती है।

प्रभु महावीर ने अपने समवसरण में चन्दनबाला को दीक्षित कर क्रान्तिकारी कदम उठाया। इस समय के जितने भी धर्मनायक हुए हैं उनमें से किसी ने स्त्री जाति को सामाजिक व धार्मिक बराबरी का स्थान नहीं दिया।

स्वयं महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्य आनन्द के कहने से स्त्रियों को दीक्षित किया था। महात्मा बुद्ध मन से स्त्री जाति को साध्वी बनाने के विरोधी थे। शिष्य आनन्द ने अपने गुरू महात्मा बुद्ध के साथ लम्बे समय तक तर्क-वितर्क के बाद स्त्रियों को बुद्ध-संघ में स्थान दिलाया था।

इसके विपरीत प्रभु महावीर को ऐसी कोई समस्या नहीं आई। इसका कारण यह था कि जैनधर्म परम्परा में प्रथम तीर्थंकर से धर्मतीर्थ में साध्वी व श्राविका को संघ में प्रमुख स्थान मिलता रहा। इसी परम्परा के प्रभु महावीर अन्तिम तीर्थंकर थे। इस परम्परा के अनुसार प्रभु महावीर ने जगत् के जीवों के कल्याणार्थ मोक्ष का उपदेश दिया। प्रभु महावीर अपने शिष्य शिष्याओं के साथ विचरण करने लगे। पावापुरी से प्रभु महावीर सीधे राजगृही पधारे।

राजा श्रेणिक और राजगृही

मगध की राजधानी राजगृही थी जो पांच पहाड़ों के मध्य में स्थित है। वहां के महाराजा प्रभु महावीर के परम भक्तों में एक था। वह कुशाग्रपुर नगर के राजा प्रसेनजित का राजकुमार था। राजा प्रसेनजित के ५०० राजकुमार थे। वह प्रभु पार्श्वनाथ की परम्परा का श्रमणोपासक था। उसके रणवास में बहुत सी रानियों का परिवार था, पर जीवन के अन्तिम क्षणों में उसने एक भील यमदण्ड की पुत्री तिलकसुन्दरी के मोह जाल में फंसकर शादी की। तिलकसुन्दरी के पिता ने शादी से पहले यह शर्त रखी कि मेरी पुत्री से उत्पन्न पुत्र ही मगध का भावी शासक होगा।

इसी शर्त को पूरा करने के लिए उसे श्रेणिक जैसे योग्य पुत्र को वन भेजना पड़ा। जहां वेणु तट के किनारे कुछ समय वह बौद्धों के आश्रम में रहा। निकट संपर्क के कारण वह बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया। फिर उसने सुभद्र वणिक की पुत्री नन्दा से विवाह किया। उसके यहां अभयकुमार जैसा कुशाग्र बुद्धि वाला राजकुमार पैदा हुआ, जो मगध का प्रधान मंत्री बना। प्रसेनजित ने अपना वचन निभाने के

लिए उस भील राजकुमार को मगध का राजा बना दिया। पर इसे राजा बनाने में प्रसेनजित को प्रसन्नता नहीं हुई।

राजा बनते ही तिलकसुन्दरी के पुत्र ने प्रजा पर अत्याचार की परम्परा शुरू कर दी। आखिर राजा प्रसेनजित बीमार पड़ गए। श्रेणिक को ढूंढ़कर मगध का सम्राट बना दिया गया। उस समय अभय व उसकी माता वणिक पुत्री नन्दा वेनातट में पिता के यहां रहे।

राजा श्रेणिक की शादी गणराज्य प्रमुख राजा चेटक की पुत्री चेलना से हुई थी। राजा चेटक का नियम था कि जैनधर्मी के अतिरिक्त किसी को वह बेटी नहीं देता था। पर यह एक प्रेम-विवाह था। राजा श्रेणिक का बल, वैभव, सौन्दर्य देखकर चेटक की पुत्री सुज्येष्ठा श्रेणिक को चाहने लगी। इस चाहत को पूरा करने के लिए अभयकुमार ने एक लम्बी योजना बनाई।

पर सुज्येष्ठा समय पर न पहुंच सकी। सुज्येष्ठा के प्रेम सम्बन्धों के बारे में उसकी बहिन चेलना भी जानती थी। वह भी राजा श्रेणिक की रानी बनना चाहती थी। उसे भी अभय की गुप्त योजना का पता लग चुका था। राजगृह से वैशाली तक एक लम्बी सुरंग का निर्माण किया जा चुका था। सुज्येष्ठा तो समय पर न पहुंची, पर चेलना पहुंच चुकी थी। अंधेरे में सैनिक रथ में चेलना को बिठा लाए। चेलना अभूतपूर्व सुन्दरी थी। वह मगध की पटरानी बनी। उसी का पुत्र कौणिक अजातशत्रु था। उसके दो पुत्र हल्ल-विहल्ल भी हुए।

अनाथी मुनि की घटना

जैसे पहले कहा जा चुका है कि श्रेणिक कुछ समय के लिए बौद्ध धर्मावलम्बी बन चुका था। रानी चेलना जिनधर्म की सच्ची उपासिका थी। वह राजा को जैनधर्म में लाने के लिए प्रयत्नरत थी कि तभी एक घटना घटी, जिस घटना के प्रभाव से राजा जैन हो गया।

राजगृह नगर के बाहर राजा मण्डिकुक्षि चैत्य की ओर भ्रमण करने निकला, जहां उसने एक ध्यानस्थ मुनि को देखा। अद्‌भुत रूप-सौन्दर्य उसके चेहरे से झलक रहा था। आयु से वह छोटा लग रहा था। राजा के मन में उसके प्रति आकर्षण पैदा हुआ। वह सोचने लगा कि भर यौवन तरुणाई में वह साधु क्यों बन गया? छोटी सी आयु में साधु बना है, जरूर किसी वस्तु का घर में अभाव होगा। अभाव के कारण वह साधु बन गया है। राजा ने सोचा- 'मुझे जरूर इस मुनि की सहायता करनी चाहिए।'

राजा मुनि की तरफ देख रहा था। शीघ्र ही मुनि ने ध्यान खोला तो पाया सामने मगध सम्राट् श्रेणिक करबद्ध खड़ा है।

राजा श्रेणिक ने पूछा- "मुनिराज! इस भरी तरुणाई में आप साधु क्यों बन गए। अभी तो आपके खाने-पहनने के दिन थे। कृपया कारण बताएं। मुझसे जो भी बन पड़ेगा, मैं सहायता करूंगा।"

मुनि आत्म-ज्ञानी थे। उन्होंने देखा मगधराज को अपने धन पर अहंकार हो गया है। इसी अज्ञानवश उसने मुझसे यह बात कही है।

मुनि ने उत्तर दिया- "राजन्! मैं अनाथ था, इसलिए मुनि बना हूं।

राजा श्रेणिक ने कहा- "कोई बात नहीं, तुम्हें किसी भी अभाव में रहने की जरूरत नहीं। मगध सम्राट् श्रेणिक तुम्हारा नाथ बनेगा, तुम्हें पूरा सहारा देगा।"

मुनि ने निर्भय होकर कहा- "राजन्! तुम तो स्वयं अनाथ हो, तुम किसी के नाथ कैसे बन सकते हो?"

राजा ने मुनि का जब यह उत्तर सुना, तो दंग रह गया, फिर भी उसने स्पष्टीकरण करते हुए कहा- "तुम शायद मुझे नहीं जानते, मैं मगध का एकमात्र सम्राट् हूं। मेरे पास चतुरंगी सेना और बहुत धन-धान्य है। मेरा परिवार विशाल है। मैं अथाह सम्पदा का स्वामी हूं। तुम मेरे साथ चलो और संसार के सुखों का आनन्द लो।"

मुनि ने कहा- "राजन्! यह सब कुछ तो मेरे पास भी था। इसमें सुख कहां था? यही तो अनाथपन है कि जिस धन धान्य को हम सुख का कारण समझते हैं, दुःख की घड़ी में इनमें से कुछ भी काम नहीं आता। मेरे भी सगे-सम्बन्धी थे, पर हमारा इनको नाथ मानना आक के दूध से खीर पकाना है।"

मुनि ने अपनी पूर्व कहानी शुरू की-

राजन्! मैं कोशाम्बी नगरी के श्रेष्ठी प्रभूत धनसंचय का सुपुत्र था। घर में धन के अम्बार लगे थे। मेरी माता मुझ पर खूब स्नेह करती थी। मेरी पत्नी शीलवती व रूपवती थी। एक दिन मुझे नेत्र पीड़ा हुई। मैं कराह उठा। उस समय मेरी पत्नी ने मेरा रात-दिन ध्यान रखा। वह मुझे पीड़ा मुक्त न कर सकी। मां दिन रात पीड़ा के कारण रोती रही। धन मुझे नीरोग न कर पाया। पिता की हित-चिन्ता, माता, पत्नी, बहिन, भाईयों का रोना धोना व्यर्थ गया। कोई मंत्र, यंत्र व औषधि से मैं ठीक न हुआ। एक दिन मैं रात्रि में अकेला पीड़ा से कराह रहा था। तो मैंने सोचा कि 'अगर पीड़ा से मुक्त हो जाऊं, तो मैं सुबह होते ही निर्ग्रन्थ मुनि बन जाऊंगा।'

मैं सुबह उठा, तो मेरी पीड़ा गायब थी। मैंने गुरु के चरणों में दीक्षा ग्रहण की। अब मैं अपनी आत्मा का नाथ बन गया हूं।

बस, यही दिन था जब श्रेणिक जैनधर्म के प्रति आकर्षित हुआ। अब वह रानी चेलना और अभयकुमार के साथ प्रभु महावीर के दर्शन को जाने लग गया था।

श्रेणिक जब युवा था। पिता ने सभी राजकुमारों को तीन परीक्षाएं ली थीं। एक परीक्षा में महल को आग लगा दी गई। सभी राजकुमार आग के भय से भाग गए। राजा श्रेणिक ने सभी राज चिन्ह जिनमें भंभा प्रमुख थीं, बचा लिए इसलिए इसका नाम श्रेणिक भंभासार पड़ा। अनेकों मुनि के संपर्क के बाद राजा श्रेणिक प्रभु महावीर का परम भक्त बना।

श्रेणिक की भगवान महावीर से तत्वचर्चा एक क्रान्तिकारी चर्चा थी। उनके उपदेश से राज्य-परिवार के मेघकुमार, नन्दीषेण आदि राजकुमार ने दीक्षा ग्रहण की। राजकुमार अभय आदि अनेक राजपुरुषों ने और सुलसा आदि रानियों ने गृहस्थ धर्म स्वीकार किया।

इस वर्ष का चातुर्मास प्रभु महावीर ने राजगृही में किया। यहां अनेक स्त्री-पुरुषों को धर्म पथ पर लाकर उनका उद्धार किया।

राजगृही में धर्म-क्रान्ति

राजगृही वह पवित्र नगरी है जिसकी भूमि को प्रभु महावीर के चरण-स्पर्श का सबसे ज्यादा लाभ मिला है। प्रभु महावीर के समय यहां अनेकों ऐतिहासिक घटनाएं हुई हैं। यहां का राजा श्रेणिक बिम्बसार था, जिसका जैनधर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म में अपना स्थान है। इस ऐतिहासिक राजा के प्रभु महावीर के साथ सांसारिक रिश्ते भी थे।

राजगृही नगरी में गुणशील चैत्य था जो राजगृही नगरी के उत्तर-पूर्व में स्थित था। इसकी

प्राकृतिक छटा का वर्णन स्वयं भगवान महावीर ने हजारों बार किया है। प्रभु महावीर के समवसरण अक्सर यहीं लगते थे। राजा अपनी चतुरंगी सेना के साथ प्रभु महावीर के दर्शन करने आता, वन्दना करता, प्रश्नों का समाधान पाता, प्रवचन सुनता। राजा श्रेणिक प्रभु महावीर का परम भक्त था। यह नगरी प्राचीनकाल से ही जैनधर्म का केन्द्र थी। प्रभु पार्श्वनाथ के श्रावक व श्रमण भी वहां अलग चैत्य व पर्वतों पर विचरण करते थे।

इस राजगृही में प्रभु महावीर पावा से विहार कर पहुंचे थे, कई विद्वान ऐसा मानते हैं। प्रथम उपदेश को श्रमण करते ही राजा श्रेणिक ने सम्यक्त्व को ग्रहण किया। उसे क्षायिक सम्यक्त्व था। इस सम्यक्त्व को धारण करने वाला फिर कभी मिथ्यात्व में नहीं उलझता। उत्तराध्ययनसूत्र में इसका निमित्त अनाथी मुनि द्वारा राजा श्रेणिक को दिया गया उपदेश है, जिसके कारण वह प्रभु महावीर की शरण में आया था। अनेक पुत्र, पुत्रियों तथा प्रजा के लोग प्रभु महावीर के भक्त थे।

हम यहां इस वर्ष के प्रमुख दीक्षा ग्रहण करने वाली आत्माओं का वर्णन करेंगे।

मेघ मुनि

मेघकुमार मगध सम्राट राजा श्रेणिक व रानी धारिणी का पुत्र था। राज्य परिवार की परम्परा के अनुसार उसे बचपन में ही पुरुष की ७२ कलाएं सिखाई गईं। जब शादी योग्य हुआ, तो आठ राज-कन्याओं के साथ उसकी शादी हो गई। उसने प्रभु महावीर का त्याग, वैराग्य परिपूर्ण प्रवचन सुना। वह दीक्षा के लिए तैयार हुआ। उसने अपने माता पिता से प्रार्थना की- आपने मेरा दीर्घकाल तक वात्सल्यपूर्वक लालन-पालन किया है, किन्तु मैं संसार के जन्म-जरा से दुःख से ऊब चुका हूं। मेरी भावना प्रभु महावीर के चरणों में संयम धर्म स्वीकार करने की है।''

माता-पिता ने मेघकुमार को बहुत समझाया। संसार के सुखों का लालच दिया। साधुचर्या के कष्ट बताए, पर मेघ कुमार न माना। उसने बड़ी लम्बी चर्चा अपने माता-पिता से की।

माता-पिता ने सोचा-'अब हमारे पुत्र पर वैराग्य का रंग चढ़ चुका है। इसे रोकना बेकार है।'

फिर माता पिता की भावना को सम्मानित करते हुए उसने एक दिन का राज्य सिंहासन स्वीकार किया। सिंहासन पर बैठते ही उसने माता-पिता से रजोहरण, पात्र आदि की मांग की।

माता-पिता ने देखा कि वैराग्य का रंग पक्का है। हम इसे ज्यादा समय नहीं रोक सकते। एक लाख स्वर्ण मुद्राएं राजा श्रेणिक ने व्यय कर साधु के उपकरण मंगवाए। उसका दीक्षा महोत्सव राज्यभिषेक की तरह मनाया गया।

रात्रि को अवहेलना

मेघकुमार अब प्रभु महावीर का शिष्य बन चुका था। प्रथम दिन था। दिन तो साधुचर्या की उपासना करते-करते बीत चुका था। रात्रि आई। साधु जीवन समता और समानता का नाम है। वहां राजकुमार और दारिद्रकुमार में भेदरेखा नहीं खींची जा सकती। इसी कारण रात्रि को उसे सोने के समय, दरवाजे के पास निचले स्थान का आसन मिला। उपाश्रय में अंधेरा था। रात्रि को अन्य मुनि अपनी शारीरिक जरूरतों के कारण एवं प्रभु से शंका-निवारण के कारण बाहर आते तो अंधेरे के कारण हर एक के पांव की टक्कर उसके आसन के साथ लग जाती इसी कारण वह सो नहीं पा रहा था।

उसने सोचा- 'मैं साधु बनकर फंस गया हूं। जब मैं राजकुमार था तो यही साधु मेरा सम्मान करते

थे। अब मैं गृह-त्यागी हूं। अब इनका सम्मान समाप्त हो गया है। यह मुझे ठोकर मार रहे हैं। चलो रात्रि समाप्त होने दो, सुबह होते ही मैं प्रभु महावीर को सभी धर्मों के उपकरण लौटाकर घर आ जाऊंगा।'

प्रभु महावीर द्वारा पूर्वभवों का वर्णन

इस प्रकार यह विचारों की उथल-पुथल थी। सुबह हुई। सभी साधु-साध्वी प्रभु महावीर के दर्शन को पधारे। प्रभु महावीर ने मेघ मुनि को देखते ही कहा- "मेघ! क्या तुम साधना-पथ से पीछे हटने का विचार कर रहे हो? युद्ध के मैदान में पहुंचकर वीर निरन्तर आगे कदम बढ़ाता है। तुम वीर हो, तथापि कायर की तरह पीछे हटना चाहते हो। थोड़े से कष्ट में धैर्य खो बैठे।

याद करो, पशु के भव में तूने जो स्वयं पर विजय पाई थी और फिर मानव जन्म मिला। अब थोड़े संकट से हार गए। लो सुनो, मैं तुम्हें तुम्हारे पिछले दो भवों की कहानी सुनाता हूं जिससे तुम्हें पता चले कि दो भवों में तूने पशु के भव में कितनी धर्म-आराधना की थी, जिसके प्रभाव से तुम्हें इतना अच्छा राज्य परिवार मिला।"

मेघ मुनि प्रभु महावीर के सम्बोधन से सावधान हुए और अपने पूर्वभव की बात सुनने लगे-

हे मेघ! पूर्वभव की बात है। विध्यांचल के सघन जंगलों में एक जंगल था, उस जंगल में सुमेरूप्रभ नाम का सफेद हाथी रहता था। वह अपने झुण्ड का राजा था। अपने विशाल परिवार का स्वामी था। एक बार उस जंगल में आग लगी। उस जंगल में दावानल के कारण ज्वालाएं आकाश को चूमने लगीं। पशु-पक्षी उस स्थान को छोड़ने लगे। सभी जानवर आग में जलने लगे। सुमेरूप्रभ अनेक हाथियों के साथ घायल हो गया।

कुछ दिन के बाद आग शांत हो गई। इस विनाश लीला को देखकर वह चिन्तित हो गया।

दूसरे जन्म में भी तुम इसी नाम के हाथी बने। तुम्हें पूर्वभव की स्मृतियां ध्यान में थीं। इस जन्म में भी 'आग द्वारा हानि न हो।' इस बात को सोचते हुए सुमेरूप्रभ ने नदी के किनारे विशाल मण्डप बनाया। लम्बी दूरी तक उसने पेड़-पौधे, झाड़-झंखाड़, उखाड़-उखाड़कर जंगल को बिल्कुल साफ कर दिया। कहीं भी घास का तिनका न छोड़ा। इस प्रकार विराट् मण्डल का निर्माण कर सुमेरूप्रभ आनन्द से रहने लगा। अब वह भविष्य के प्रति निश्चिंत था।

एक समय की बात है कि जंगल में पुनः दावानल सुलग उठा। जंगल के सभी जीव जन्तु अपना जन्मजात वैर भुलाकर उस मण्डल में एकत्रित होने लगे। हाथी, सिंह, मृग, खरगोश, लोमड़ी सभी को अपनी जान बचाने की चिन्ता थी। सुमेरूप्रभ भी वहां आ पहुंचा पर उसका अपना बनाया मण्डल अब अन्य जीवों से भर चुका था। वह एक किनारे खड़ा हो गया। उसने किसी भी प्राणी को कोई कष्ट नहीं पहुंचाया।

दावानल जलता रहा, हरा-भरा वन भस्म होता रहा। एक प्रलयकारी दृश्य सामने था, पर सुमेरूप्रभ का बनाया मण्डल पूर्ण सुरक्षित था। उसे एक ज्वाला भी स्पर्श न कर सकी थी।

उस समय अचानक सुमेरूप्रभ हाथी को खुजली होने लगी। उसने अपने आगे का पांव खुजलाने के लिए ऊपर उठाया। ज्यों ही खुजलाकर पैर को पुनः नीचे रखने लगा तो उसने देखा एक नन्हा सा खरगोश मृत्यु के भव से थर-थर कांप रहा है। कांपते हुए खरगोश को देखकर सुमेरूप्रभ हाथी के मन में करूणा आ गई। उसने इसी करुणावश अपना पैर ऊपर उठाए रखा, पैर नीचे नहीं रखा। खरगोश का